इस्लाम

इस्लामः पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ –

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम का परिचय।
II. इस्लाम को समझना।

कक्षा #२:

III. मुसलमानों के बीच प्रचार।
   क. मुसलमानों के बीच प्रचार करने का परिचय।
   ख. मुसलमानों तक पहुँचने के लिए सेतु का निर्माण करने हेतु प्रस्ताव और मनोभाव।

कक्षा #३:

III. मुसलमानों के बीच प्रचार।
   ग. धर्मशास्त्र और धर्म पर आधारित सेतु।

कक्षा #४:

III. मुसलमानों के बीच प्रचार।
   ग. धर्मशास्त्र और धर्म पर आधारित सेतु। (जारी।)
   घ. अन्य विविध सेतु (जारी।)
   ङ. सेतु के रूप में महसूस की गयी ज़रूरतें।

कक्षा #५:

IV. मुसलमानों के बीच प्रचार।
   च. सेतु के रूप में महसूस की गयी ज़रूरतें। (जारी।)
   परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

इस्लाम: परीक्षा

संभावित २० बिन्दु प्रश्न

१) पांच बुनियादी मुसलमान मान्यताओं और प्रथाओं की व्याख्या करने के द्वारा इस्लाम की व्याख्या करें (पृष्ठ २६४, २६५)।

२) यीशु से सम्बंधित किन्ही तीन बिन्दुओं का चुनाव करें और दिखाएँ कि कैसे इनका इस्तेमाल मुसलमानों तक पहुँचने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकते है (पृष्ठ २७०-२७२)।

३) मुसलमानों की "महसूस की जाने वाली ज़रूरतों" को चुनाव करें और दिखाएँ कि कैसे इनका इस्तेमाल मुसलामानों को मसीह में लाने के लिए किया जा सकते है (पृष्ठ २७५-२७७)।

संभावित १० बिन्दु प्रश्न

१) २ व तीन वाक्यों में, इस्लाम के शुरुआत की व्याख्या करें (पृष्ठ २६४)।

२) प्रचार करने के कार्य में "सेतु का निर्माण करने" के विचार को परिभाषित करें (पृष्ठ २६४)।

३) एक बुनियादी, सरल सूत्र दें जिसका इस्तेमाल मुसलामानों के बीच प्रचार करने के लिए किया जा सकता है (पृष्ठ २६४)।

४) स्वदेशी प्रशिक्षण क्या है? (पृष्ठ २७४)

५) मेजबानी का सेतु क्या है? (पृष्ठ २७४,२७५)

६) "लोक (स्थानीय)" मुसलमानों में अनजाने भय को लेकर मसीहियों के पास क्या उत्तर है (पृष्ठ २७६)।

इस्लाम

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम का परिचय।

लेखक का उदाहरण:

एक मसीही व्यक्ति अपने दोस्त के जीवन का गवाह होना चाहता था। उसका दोस्त मुसलमान था। एक दिन वह प्रार्थना की तैयारी कर रहा था। उसने अपने हाथों को धोया। उसने अपनी बाँह के हिस्सों और अपने चेहरे को धोया। उसने अपने शरीर के कई अन्य हिस्सों को धोया। फिर मसीही व्यक्ति ने उससे कहा, "तुम एक सबसे महत्वपूर्ण हिस्से को धोना तो भूल ही गए।" मुसलमान दोस्त ने कहा "कौन सा हिस्सा"। "मसीही व्यक्ति ने जवाब दिया कि "तुम अपने हृदय को धोना भूल गए"। मुसलमान दोस्त कहता है "नासमझ मत बनो"। मैं अपना हृदय नहीं धो सकता। मसीही व्यक्ति ने इस बात से सहमत होकर उत्तर दिया, "तुम सही कहते हो। इसलिए तुम्हें मसीह की ज़रूरत है।"

अपना उदाहरण लिखें:

लेखक का उदाहरण:

संसार भर में एक बड़ी संख्या मुसलामानों की है। हम कैसे उन तक पहुँच सकते हैं? सर्वप्रथम हमें यह समझने की आवश्यकता है कि वे कौन हैं और वे क्या विश्वास रखते हैं। इसके पश्चात हमें उनसे सम्बंधित अपने ज्ञान के अनुसार उनके बीच प्रचार करना चाहिए।

II. इस्लाम को समझना।

लेखक का उदाहरण:

इस्लाम का अर्थ है "परमेश्वर के अधीन होना"। इसलिए, एक मुसलमान वह है जो परमेश्वर के अधीन होता है।

इस्लाम

टिप्पणियाँ -

क. इस्लामिक आंकडें और तिथियां।

१. संसार भर में २०% मुसलमान हैं।

क. सभी मुसलमानों में से ५२% एशिया में पाए जाते हैं।
ख. २८% मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में रहते हैं।
ग. १३% उप-सहारा अफ्रीका में रहते हैं।
घ. बाकी ६% यूरोप और रूस में पाए जाते हैं।

२. आधिकारिक तौर पर इस्लाम की शुरुआत ६८० ईस्वी में हुई।

क. मुसलमान पंचांग या कैलेंडर ६२२ ईस्वी में शुरू होता है (मुसलमानों के लिए वर्ष शून्य)।
ख. इस्लाम के निर्माता मुहम्मद ५७०-६३२ तक जीवित रहे।
ग. मुहम्मद ने अपने पहले प्रकाशनों को ६१० में प्राप्त किया और सार्वजनिक रूप से प्रचार करना आरम्भ किया।
घ. मुहम्मद ६२२ में मक्का से मदीना आए।

ख. इस्लाम के बारे में मूल जानकारी।

१. बुनियादी मुसलमान मान्यताओं में निम्नलिखित बातें शामिल हैं।

क. मुहम्मद आखिरी और महान भविष्यद्वक्ता रहे, और अन्य सभी से बड़े हैं।

ख. इस्लाम की पवित्र पुस्तकों और भविष्यद्वक्ताओं में निम्न शामिल हैं:

१) टोरा – अब्राहम।
२) भजन संहिता – दाऊद।
३) सुसमाचार – यीशु।
४) कुरान – मुहम्मद।

ग. मुसलमान स्वर्गदूतों में विश्वास रखते हैं (दोनों बुरे व अच्छे)।

टिप्पणियाँ -

घ. मुसलमान न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं। स्वर्ग में स्वीकृति के लिए मानदण्ड अच्छे कार्यों के अनुसार है। यदि किसी व्यक्ति ने बुरे कामों से अधिक अच्छे काम किये हैं तो वह स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। वे पुनरुत्थान के दिन पर विश्वास करते हैं।

ङ. मुसलामान ईश्वरीय नियति पर विश्वास करते हैं। अल्लाह जो भी आदेश देते हैं, वह अवश्य ही पूरा हो जाता है।

च. अल्लाह एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ "परमेश्वर" है। मुसलामानों के लिए अल्लाह अद्वितीय या सबसे अलग, सर्वशक्तिमान और दयालु हैं।

२. मुसलमान की मूल प्रथाएं: इस्लामी विश्वास के पाँच स्तम्भ।

क. आनुष्ठानिक प्रार्थना: पंथ का अंगीकार – "मैं इस बात का गवाह हूँ कि अल्लाह को छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है, और मुहम्मद परमेश्वर के नबी (भविष्यद्वक्ता) हैं"।

ख. दान देना।

ग. रमज़ान का रोज़ा (उपवास) – दिन के उजाले के घंटों के दौरान महीने भर चलने वाला उपवास।

घ. मक्का की यात्रा – हर एक मुसलमान के लिए अपने जीवन काल में कम से कम एक बार हज पर जाने का प्रयास करने का आदर्श।

ङ. जिहाद (पवित्र युद्ध) – इस्लाम के नाम पर युद्ध से भरे उत्साह का कार्य।

३. मुसलमानों का मानना है कि स्वर्ग में जाने की उनकी संभावना, हालांकि गारंटी नहीं है, लेकिन इन पांच स्तंभों के सावधानीपूर्वक रखरखाव से बढ़ जाती है।

४. इस्लाम के कई प्रकार/सम्प्रदाय:

क. शिया – अरबी प्रकार के कट्टरपंथी। मौलिक रूप से रूढ़ीवादी।

ख. सुन्नी – यद्यपि इस प्रकार के लोग बुनियादी तत्वों पर बल देते हैं, लेकिन वे प्राय: सहज या स्वतंत्र रूप में व्यावहार करते हैं। इस प्रकार के लोगों को मध्य पूर्वी क्षेत्रों से परे बहुत से स्थानों में देखा जा चुका है।

ग. सूफ़ी – एक रहस्यमय समूह; जो दर्शन, आश्चर्यक्रम और व्यक्तिगत अनुभवों पर ज़ोर देता है।

टिप्पणियाँ -

III. मुसलामानों के बीच प्रचार करना।

क. मुसलामानों के बीच प्रचार करने का परिचय।

१. यीशु ने सुसमाचार को एक विशेष तरीके से नीकुदेमुस के सामने प्रस्तुत किया, जो कि एक यहूदी व्यक्ति था (यूहन्ना ३:१-२१)।

२. यीशु ने उस स्त्री के सामने जो सामरी थी एक अलग तरीके से सुसमाचार को प्रस्तुत किया (यूहन्ना ४:७-२६)।

३. प्रस्तुत करने का तरीका सुनने वालों की पृष्ठभूमि के अनुसार अलग होता है। प्रचारक को बाइबल के बारे में पता होना चाहिए। उसे अपने श्रोताओं या सुननेवालों के बारे में पता होना चाहिए।

क. सुसमाचार की विषय-वस्तु नहीं बदलती।

ख. सुसमाचार को प्रस्तुत करने का तरीका बदल सकता है।

४. प्रेरितों के काम की पुस्तक में, सुसमाचार को अलग तरीकों से प्रस्तुत किया गया।

क. सुसमाचार प्रस्तुति के द्वारा बाइबल आधारित सत्यों के माध्यम से सुनने वाले लोगों की विशेष ज़रूरतों का समाधान तथा परिस्थितियों की पूर्ति होनी चाहिए।

ख. एक यहूदी के गवाह होने का तरीका एक गैर-यहूदी के गवाह होने से अलग था।

ग. आज की दुनिया में, हम कह सकते हैं कि एक नास्तिक सुसमाचार सुनाने का तरीका मुसलमान को सुसमाचार सुनाने के तरीके से अलग होगा।

५. हमें अलग-अलग लोगों के लिए सुसमाचार के अलग-अलग तरीकों पर विचार करने की आवश्यकता है। हमें अपने सुसमाचार प्रचार करने के कार्य में एक सेतु बनाने की आवश्यकता है।

क. सेतु एक ऐसा उपकरण है जो उन चीज़ों को जो अलग हो गयी हैं जोड़ता है।

१) सुसमाचार प्रचार करने में सेतु का निर्माण किसी दिखावटी एकता का निर्माण नहीं करता।

क) अच्छे रिश्तों को बनाए रखने के लिए यह अंतर को नज़रअंदाज नहीं करता।

ख) वह किसी दूसरे व्यक्ति को ठोकर से बचाने के लिए अधूरा सुसमाचार प्रचार नहीं करता।

टिप्पणियाँ -

२) प्रचार करने के कार्य में सेतु का निर्माण उपलब्ध चीज़ों का इस्तेमाल करता है। यह दो लोगों में क्या समानता है इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है।

क) जो भी आशीष दी जा सकती है यह देता है।

ख) यह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए सब कुछ बन जाता है ताकि सभी का उद्धार हो सके (१ कुरि. ९:२२)।

ख. सेतु syncretism (सिनक्रेटिसम) अर्थात समन्वयता (अलग-अलग धर्मों का मिश्रण) को बढ़ावा नहीं देता। सुसमाचार प्रचार में सेतु का निर्माण ज़िम्मेदार प्रासंगिकता (सुसमाचार को अन्य संस्कृतियों में जाने की अवसर देना) को बढ़ावा देता है।

टिप्पणी: इस पाठ्यक्रम का बाकी का भाग मुसलमानों के बीच सुसमाचार प्रचार करने में सेतु के निर्माण पर केन्द्रित होगा।

ख. मुसलमानों तक पहुँचने के लिए सेतु का निर्माण करने हेतु प्रस्ताव और मनोभाव।

१. सी. आर. मार्श मुसलमानों के बीच प्रचार करने के विशेषज्ञ हैं। वह कहते हैं: "उस सत्य की चमक से आरम्भ करें जो उनके धर्म में है, और फिर उसे परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को जानने के लिए प्रेरित करें।"[१]

२. मुसलमानों के लिए सेतु का निर्माण करने का एक सरल सूत्र।

क. एक मुसलमान के साथ बातचीत को बढ़ावा देने के लिए मुसलमान के विश्वास के मज़बूत बिन्दुओं का अध्ययन करें और उनका इस्तेमाल करें।

ख. जिन स्थानों की कमी है उन्हें भरने के लिए परमेश्वर के राज्य की पेशकश करें। उदाहरण के लिए:

१) एक मुसलमान जानता है कि वह परमेश्वर के मानकों तक नहीं पहुंचा पाया है। वह क्षमा के लिए (मजबूत बिंदु) बार-बार प्रार्थना करता है।

२) हालांकि, उनके धर्म में क्षमा का कोई आश्वासन नहीं है। वह केवल आशा कर सकता है (एक स्थान जिसकी कमी है)।

३) मसीही को उसे प्रयश्चित की पेशकश करनी चाहिए (परमेश्वर का राज्य)।

३. मुसलमान विश्वास एक-ईश्वरवादी है (वे एक ईश्वर में विश्वास करते हैं)। मसीहियत एक-ईश्वरवादी है। हमें इस आम विश्वास का लाभ उठाना चाहिए। मुसलमानों को मूर्तिपूजक या नास्तिक न समझें। एक मुसलमान को अल्लाह का पक्का डर होता है। यह एक सेतु हो सकता है।

टिप्पणियाँ -

४. मुसलमान अपने विश्वास से शर्मिंदा नहीं है। वे अक्सर अपने विश्वास को दूसरों के साथ साझा करने के लिए उत्सुक रहते हैं। इसलिए, मुसलमानों को गवाही देने के बहुत से अवसर हैं। वे एक मसीही में उत्सुकता और खुलेपन की प्रशंसा करेंगे।

क. मुसलमानों को सुसमाचार प्रचार करने में सहासी बनें।

ख. साथ ही साथ, विनम्रता दिखांए (साहस और नम्रता को अक्सर अलग-अलग समझा जाता है – ठीक विपरीत सच है – जब वे वास्तविक होते हैं तो वे हमेशा एक साथ होते हैं)।

ग. संदेश सहासी होना चाहिए (समझौता किए बिना)। संदेश विनम्र होना चाहिए (प्रेम में प्रस्तुत किया गया)।

घ. संदेशवाहक उनता ही महत्वपूर्ण है जितना की संदेश। इस प्रकार, मुसलमानों के सामने ऐसा जीवन जीना महत्वपूर्ण है जो मुसलमानों को प्रचार किए गए आपके संदेश के अनुरूप हो (यह मुसलमान संस्कृति में विशेषरूप से महत्वपूर्ण है)।

५. इस्लाम की निंदा करने से बचें। मुहम्मद के बारे में बुरा बोलने से बचें। करूणा का भाव रखें। उसके दृष्टिकोण से देखें। आप कैसे संपर्क करना चाहेंगे?

क. सच बोलें और होने दें कि सच कायल करे, मनाए या दोषी ठहराए।

ख. यीशु के बारे में सकारात्मक बोलें। मुहम्मद के बारे में नकारात्मक न बोलें।

१) मुहम्मद के बारे में नकारात्मक बोलना केवल मुसलमान को परेशान करता है और सुसमाचार के लिए द्वार बंद कर देता है।

२) यीशु के बारे में सकारात्मक बोलना भी (यहाँ तक कि यूहन्ना १४:६ को भी उद्धृत करना) द्वार को बंद कर सकता है, लेकिन यह कम से कम पवित्र आत्मा को कार्य करने का अवसर देता है।

ग. सी. आर. मार्श कहते हैं, ''सच्ची दाखलता को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि वह अपने लिए सुसमाचार के फल को एकत्र करने की ईच्छा कर सके।''[२]

६. ईमानदार बनें। वास्तविक बनें। उसकी अंतरात्मा से बात करने की कोशिश करें।

क. एक धर्मवादी मुसलमान धार्मिक चर्चा करना चाहेगा। बौद्धिक स्तर पर भाग लेना आवश्यक होगा।

ख. हालांकि, हमेशा एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता के ध्यान केद्र पर वापस आएं। क्षमा की आवश्यकता की ओर संकेत करें। सुसमाचार मनुष्य की क्षमा के मार्ग की लालसा को संतुष्ट करता है।

टिप्पणियाँ -

१) आवश्यकता के लिए अपील। यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में पेश करें।

२) यह महत्वपूर्ण नहीं है कि वे कितने धार्मिक प्रतीत होते हैं। उन्हें अभी भी उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

७. किसी भी चीज से अधिक प्रेम दिखाएं।

क. एक मुसलमान के शब्दों पर विचार करें जो परिवर्तित हो गया था ''परमेश्वर के जन ने मेरे अविश्वास और घमंड के लिए इतना खेद महसूस किया कि वह रोने लगा। उसके आंसूओं ने मेरे लिए वह किया जो उसके तर्कों ने नहीं किया... उन्होंने मेरा दिल पिघला दिया।''

ख. सी. आर. मार्श कहते हैं, ''एक मुसलमान परिवर्तन के हर मामले में, वह पहले मसीही प्रेम से प्रभावित हुआ।''[3]

ग. धर्मशास्त्र और धर्म पर आधारित सेतु।

१. पश्चिम में ''नास्तिक चलन'' के कारण, परमेश्वर की बातों के बारे में चर्चा करना स्वभाविक नहीं माना जाता। मुसलमान समुदायों में यह अलग है। सारा जीवन धार्मिक मान्यताओं के चारों ओर घूमता है। एक लेखक का कहना है ''धार्मिक मान्यताएं जीवन के प्रत्येक क्षण के दौरान व्यवहारिक रूप से प्रत्येक कार्य को प्रभावित करती हैं।''

क. यह एक बहुत उपयोगी सेतु बनाता है जिसे ''रूचि'' कहा जाता है।

ख. मुसलमानों के लिए, ईश्वर की बातें बोलना स्वभाविक है। इसे समझें और अपने लाभ के लिए इसका इस्तेमाल करें।

१) धार्मिक मुद्दों और विचारों पर चर्चा करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें।

२) एक साथ वचन पढ़ें।

२. इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो संपूर्ण जीवन से जुड़ा है। यह मस्जिद तक ही सीमित नहीं है (एक मस्जिद मुसलमान आधारना स्थान है)।

क. यहाँ एक सेतु है। मुसलमान यीशु द्वारा सिखाए गए परमेश्वर के राज्य की व्यापक प्रकृति को समझ सकते हैं। वह यह नहीं कहेंगे कि ''हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईश्वर को शामिल नहीं करना चाहिए। परमेश्वर की बातों के लिए एक समय और स्थान है।'' उनका धर्म कहता है कि ईश्वर को जीवन प्रत्येक भाग में शामिल करना चाहिए।

ख. इसलिए जब हम परमेश्वर के राज्य की गवाही दे रहे हैं तो हमारे पास उपयोग करने के लिए एक सेतु है। एक मुसलमान हमारे इस दावे को समझेगा कि मसीहियत जीवन का एक संपूर्ण तरीका होना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

३. एक मुसलमान के लिए यीशु एक ऐसा ठोकर का पत्थर है जिसे वह स्वीकार नहीं कर सकता। हालांकि, एक बुद्धिमान सुसमाचार प्रचारक यीशु का उपयोग मुसलमानों तक पहुंचने के लिए एक सेतु के रूप में कर सकता है।

क. यीशु का जन्म।

१) कुवांरी से जन्म का उल्लेख कुरान (इस्लाम की पवित्र पुस्तकों में सबसे महत्वपूर्ण) में किया गया है।

२) अब्दुल हक, एक अरब लेखक, दर्ज करते हैं कि ''कुरान में यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के वचन का अवतार प्राकृतिक प्रजनन के बजाय एक अद्वीतीय रचनात्मक चमत्कार के माध्यम से हुआ।''[४]

३) कुरान उस अद्वितीय तरीके को स्वीकार करती है जिसके माध्यम से यीशु का जन्म हुआ। इसका उपयोग मुसलमानों को यह स्वीकार कराने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है कि यीशु एक अद्वितीय व्यक्ति हैं। यह सत्य उनके लिए यीशु को एक उद्धाकर्ता के रूप में देखने के लिए आधारभूत है।

ख. यीशु की सेवकाई।

१) कुरान यीशु की अलौकिक शिक्षाओं का इकांर नहीं करती। यह पुष्टि करती है कि यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला, कोढ़ियों को चंगा किया, अंधों को दृष्टि दी, बहरों को सुनाया और लोगों को मुर्दो में से जीवित किया।

२) मुसलमान यीशु के चमत्कारों के बारे में बहुत उत्सुक हैं। उन्हें ऐतिहासिक तथ्य के साथ चुनौती दी जानी चाहिए कि यीशु ने अपने नाम और सामर्थ्य में चंगा किया।

३) कुरान यीशु की सेवकाई में सामर्थ्य और अधिकार को पहचानती है। इसका उपयोग मुस्लमानों को उस परम अधिकार और सामर्थ्य को पहचानने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है जो अब यीशु के पास है। यह यीशु के प्रभुत्व से संबंधित है।

ग. यीशु का पापरहित जीवन।

१) कुरान यीशु की सिद्धाता को नहीं नकारती। यह उनके पापरहित जीवन की पुष्टि करती है।

२) इतिहास में और कौन पापरहित था? कोई नहीं। यहाँ तक कि मुहम्मद भी नहीं! मुहम्मद ने कहा कि उन्होंने प्रतिदिन ७० बार क्षमा मांगी।

३) कुरान यीशु के पापरहित जीवन की विशिष्टता और अतुलनीयता को पहचानती है। इसका उपयोग मुसलमानों की पहचान यीशु के ईश्वरत्व से कराने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

घ. यीशु की मृत्यु।

१) यीशु की मृत्यु का इस्तेमाल मुसलमानों को चुनौति देने के लिए किया जाना चाहिए।

२) यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की। वह जानते थे कि उनकी मृत्यु कब, कैसे, और कहाँ होगी। कोई और मनुष्य इन बातों को नहीं जानता। फिर से, यहाँ तक कि मुहम्मद भी नहीं! वह बहुत अप्रत्याशित रूप से मरे।

३) कुरान यीशु के पापरहित जीवन को मान्यता देती है। यीशु को मरना नहीं था। इसका उपयोग मुसलमानों को यीशु को परमेश्वर के मेम्ने के रूप में पहचानने, पापों के प्रायश्चित के रूप में पहचानने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है।

ङ. यीशु की वापसी।

१) कुरान यीशु के दूसरे आगमन के बारे में सिखाती है।

२) कुरान के अनुसार, यीशु (मुहम्मद नहीं) ४० सालों तक पृथ्वी पर शासन करने के लिए लौट आएंगे। मुसलमानों को इस सवाल के साथ चुनौति दी जानी चाहिए, क्यों? यीशु क्यों? वह क्यों लौटेगें?

३) कुरान यीशु की वापसी को स्वीकार करती है। इसका उपयोग मुसलमानों को यीशु को एक न्यायी के रूप में स्वीकार करने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है।

च. यीशु की आज्ञाएँ।

१) मुसलमान सुसमाचारों को पवित्र पुस्तकों के रूप में स्वीकार करते हैं। उन्हें यीशु की आज्ञाओं के साथ चुनौति दी जानी चाहिए।

क) यीशु ने दावा किया ''कोई बिना मेरे पिता के पास नहीं आ सकता'' (यूहन्ना १४:६)।

ख) उन्होंने परमेश्वर के रूप में बार-बार कहा, ''मेरे पास आओ'' (मत्ती ११:२८), और ''अपना क्रूस उठाओं और मेरे पीछे चलों'' (मत्ती १६:२४)।

२) मुसलमान सुसमाचार को स्वीकार करते हैं। यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता कहा गया है। फिर भी वे यीशु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते।

क) इसके अलावा, वे उस सत्य को स्वीकार नहीं करते जो यीशु कहते हैं। यह असंगत है। यह तर्क की अवहेलना करता है।

ख) यीशु या तो महान भविष्यद्वक्ता थे या महान झूठे थे। वह दोनों नहीं हो सकते।

टिप्पणियाँ -

ग) मुसलमानों को इस तथ्य के साथ चुनौति दी जानी चाहिए कि उन्हें चुनना होगा। यदि यीशु महान भविष्यद्वक्ता है, तो उनके शब्दों को सत्य के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

३) कुरान यीशु को एक महान भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करती है। इसका उपयोग मुसलमानों को यीशु की आज्ञाओं को स्वीकार कराने में एक सेतु के रूप में किया जा सकता है।

४) कुरान मसीह की वापसी को स्वीकार करती है।

क) हमें मुसलमानों को यह पुछकर चुनौति देनी चाहिएः ''जब यीशु वापस लौटेंगे, तो आप उनसे क्या कहेंगे जिन्हें आपने एक भविष्यद्वक्ता कहा था, और फिर भी जिनके वचनों पर विश्वास नहीं किया?''

ख) अपने मुसलमान मित्र को याद दिलाएं कि यीशु ने कहा, ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ'' (यूहन्ना १४:६)। उन्होंने यह नहीं कहा, ''मैं मार्ग, और जीवन लाता हूँ।''

छ. यीशु की उपाधियाँ।

१) कुरान यीशु को ''परमेश्वर का वचन'' के रूप में संदर्भित करती है।

२) यह मसीह की पहचान के बारे में अधिक स्पष्टता से विचार करने के लिए एक सेतु हो सकता है। परमेश्वर का वचन क्या है? यीशु कौन है?

लेखक का उदाहरण:

हम इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि हम अपने प्रतिद्वंदी को घेरने और हराने की कोशिश नहीं कर रहे। हम एक मित्र को चुनौति देने और उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य किसी बहस को जीतना नहीं है। हमारा लक्ष्य व्यक्ति को जीतना है! हम वकील नहीं हैं जो कानून का मामला जीतने की कोशिश कर रहे हैं। हम सुसमाचार प्रचारक हैं जो एक आत्मा को जीतने की कोशिश कर रहे हैं!

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

४. कुरान को मुसलमानों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए एक सेतु के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कुरान यीशु के बारे में बहुत सम्मान के साथ बोलती हैं। कुरान बाइबल को भी बहुत अधिक महत्व देती है। प्रभावशीलता के लिए शायद स्वंय बाइबल को एक मुख्य सेतु के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए...

क. कई रिपोर्टों से पता चलता है कि बड़ी संख्या में परिवर्तित मुसलमान बाइबल को पढ़ने के द्वारा प्रभु के पास आए हैं।

ख. एक रिपोर्ट एक अफगान प्रमुख का वर्णन करती है जो अपने क्षेत्र में एक बहुत प्रभावशाली मसीही अगुवे हैं।

१) मुखिया गवाही देते हैं कि कैसे एक मसीही ने उन्हें बाइबल दी और इसे पढ़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने शास्त्र के लिए पहले से ही स्थापित सम्मान के अनुसार उन्हें प्रोत्साहित किया (जिसे आशीषित किया जा सकता है उसे आशीष देना याद रखें!)।

२) यहाँ इस्लाम के लिए एक महत्वपूर्ण सेतु है। एक मुसलमान पवित्र पुस्तकों का सम्मान करता है। इसका उपयोग उसे पवित्र पुस्तक तक ले जाने के लिए किया जा सकता है।

३) मसीहियों को याद रखना चाहिए कि वे मुसलमान संस्कृति को ठेस न पहुंचाए।

क) उदाहरण के लिए, मुसलमान कुरान को कभी जमीन पर नहीं रखेगा। वह उसे पकड़ता या लकड़ी के स्टैंड पर रखता है।

ख) हम अपनी बाइबल के साथ ऐसा करके सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो सकते हैं। यह एक और भी मजबूत संबंध बनाएगा... एक मजबूत सेतु।

५. प्रार्थना का उपयोग मसीह के लिए एक मुसलमान तक पहुंचने के लिए एक सेतु के रूप में किया जा सकता है।

क. मुसलमान प्रार्थना के लिए समर्पित हैं। हालांकि, यह एक रीति-रिवाज प्रार्थना प्रणाली है। समर्पण कर्तव्य, दायित्व, और परमेश्वर के प्रति कर्ज की भावना से आता है।

ख. यह समर्पण एक सेतु हो सकता है। मुसलमान प्रार्थना प्रणाली परमेश्वर के साथ एक वास्तविक संबंध प्रदान नहीं करती। मुसलमान को यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना में परमेश्वर के साथ संवाद करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

घ. मुसलमानों तक पहुँचने के लिए अतिरिक्त सेतु।

१. स्वदेशी प्रशिक्षण (स्वदेसियों को प्रशिक्षण देना ताकि वे सुसमाचार प्रचार कर सकें और अपनी संस्कृति के लोगों को चेला बना सकें)।

क. यह सबसे प्रभावशाली दीर्घकालिक सेतु है। राष्ट्रीय विश्वासी सेतु बन जाता है। राष्ट्रीय विश्वासी पहले से ही संस्कृति को जानता है।

ख. छात्र को अपने प्रशिक्षण के दौरान अपनी भौगोलिक स्थिति में ही बने रहना चाहिए।

ग. प्रशिक्षण अरबी भाषा में किया जाना चाहिए (यदि वह प्रयोग की जाने वाली प्रमुख भाषा है)।

१) उनकी भाषा में बोलना संवेदनशीलता, पहचान और सम्मान प्रदर्शित करना है।

२) मुसलमान सुसमाचार प्रचार में भाषा विशेषरूप से महत्वपूर्ण है। अरबी मुसलमानों द्वारा पूजनीय है। निश्चित रूप से, प्रमुख धार्मिक शब्दों को सीखा जाना चाहिए और ठीक से उपयोग किया जाना चाहिए।

२. एक सेतु के रूप में परिवारिक इकाई।

क. मुसलमान संस्कृति में परिवार बहुत मजबूत और प्रभावशाली है। हम यह भी कह सकते हैं कि धर्म परिवार के प्रभाव से व्यक्ति पर अपने अधिकार का प्रयोग करता है। एक मुसलमान समाज में परिवार और धर्म एक दूसरे को मजबूत करता है।

ख. भूतकाल में, बहुत से मिशनरियों को सफलता नहीं मिली क्योंकि उन्होंने केवल व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित किया। परिवार के सकारात्मक प्रभाव को एक सेतु के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

ग. सांस्कृतिक रूप से, एक व्यक्ति केवल अपने परिवार के सामाजिक संबंधों के माध्यम से बड़े समूहों में भाग लेता है। इस प्रकार, पूरे परिवार को सुसमाचार प्रचार का अभ्यास किया जाना चाहिए। बहुत बार, मुसलमान पारिवारिक इकाईयों में प्रभु के पास आए हैं।

३. अतिथि सत्कार सेतु।

क. मुसलमान संस्कृति में अतिथि सत्कार अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अत्यधिक सम्मानित मूल्य है।

टिप्पणियाँ -

ख. यह मसीहियत के लिए बहुत ही प्राकृति सेतु है।

१) नया नियम एक मसीही मूल्य के रूप में अतिथि सत्कार पर जोर देता है (रोमियों १२:१३; १ तीमुथियुस ३:२; तीतुस १:८; १ पतरस ४:९)।

२) मिलने और मिलने जाने से एक मजबूत दोस्ती और विश्वास साझा करने के कई अवसर मिल सकते हैं।

४. एक सेतु के रूप में ''गवाह''।

क. जैसा कि हमने सीखा, 'गवाही' मुसलमान विश्वास की मुख्य प्रथाओं में से एक है। मुसलमान दृढ़ विश्वास के साथ दोहराएगा, ''मैं गवाह हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और यह कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।''

ख. इस अभ्यास में किसी व्यक्ति के लिए अपने नैतिक जीवन में परिवर्तन करने की कोई बाध्यता नहीं होती है।

ग. इस प्रकार, एक मसीही की गवाही को नैतिक जीवन में परिवर्तन पर ज़ोर देना चाहिए जो कि मसीह में उपलब्ध है। हमरी गवाही है कि हमने नया जन्म पाया है। हम नए प्राणी है (यूहन्ना ३:३; २ कुरि. ५:१७)।

घ. सेतु हमारी व्यक्तिगत गवाही है। हमारे अपने जीवन में परिवर्तन मुसलमानों की बदलने में असमर्थता की भावना से अपील कर सकता है। वह जल्द ही यह जान सकता है कि जिसकी उसके पास कमी है यह वही मूल्य हैं जो मसीह प्रदान करते हैं।

ङ. सेतु के रूप महसूस की गई जरूरते (विशेषरूप से पारम्परिक मुसलमानों के साथ)।

१. महसूस की गई जरूरत - परमेश्वर के साथ संबंध।

क. इस्लाम घोषणा करता है, ''मनुष्य का मन कभी भी पर्याप्त रूप से ईश्वर की कल्पना नहीं कर सकता, वह हमेशा उसके बारे में बहुत कम सोचेगा।''

ख. फिर भी, प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर को जानने की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

कुछ पारम्परिक मुसलमानों को (जो इस्लाम के लोकप्रिय रूप का अभ्यास करते हैं जो अधिक रहस्यमय है) तीन दिनों की अवधि में २००,००० बार ''हे ईश्वर'' दोहराकर ईश्वर के साथ संपर्क में आने की कोशिश करने के लिए जाना जाता है।

हमें परमेश्वर के साथ संवाद में रहने के इस उत्साह का उपयोग एक सेतु के रूप में करना चाहिए। महसूस की गई जरूरत सेतु है। यीशु इस जरूरत को पूरा करने के लिए सेतु की दूसरी ओर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

२. महसूस की गई जरूरत - अज्ञात का भय।

क. बहुत से मुसलमानों को (विशेषरूप से पारम्परिक मुसलमान) अज्ञात का भय है। एक मुसलमान को भविष्य का बड़ा डर हो सकता है।

१) इस भय के लिए उनका उत्तर स्वर्गदूत आराधना, भविष्यद्वाणी, और भाग्यवाद है।

२) मसीह में वास्तविक समाधान की पेशकश के माध्यम से मुसलमानों को सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है। यह मसीह में है कि भविष्य पहले से ही मौजूद है (इफिसियों २:१०)। इस प्रकार, मसीह में होने का अर्थ भविष्य का भय न होना है (देखें इब्रानियों २:१५, फिलिप्पियों १:२१; रोमियों ६:६-११; १ यूहन्ना ५:१३)।

ख. हमें मुसलमानों को यह दिखाना चाहिए कि वास्तविक, व्यक्तिगत, संबंधपरक रूप से उन्मुखी यीशु कैसे एक मार्गदर्शक हो सकते हैं। वह व्यक्तिगत सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं जो उनके भय को बदल देगा।

१) महसूस की गई जरूरत को करूणा से संबोधित करना बचाव के लिए एक सेतु का निर्माण करना है।

२) यीशु इस महसूस की गई जरूरत का इलाज हैं।

३. एक महसूस की गई जरूरत - एक समूदाय की आवश्यकता। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सेतु परमेश्वर के परिवार और परमेश्वर के घराने की मसीही अवधारणा है।

४. एक महसूस की गई जरूरत - दुष्टात्माओं से सुरक्षा की आवश्यकता। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सेतु दुष्टात्माओं पर यीशु की सामर्थ्य है।

५. एक महसूस की गई जरूरत - बीमारी से स्वतंत्रता की आवश्यकता। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सेतु यीशु की चंगाई की सामर्थ्य है।

६. एक महसूस की गई जरूरत - परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्त की आवश्यकता। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सेतु यीशु मसीह है (१ तीमुथियुस २:५)।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

जरूरतों के माध्यम से सुसमाचार प्रचार में समय लगता है। धीरज आवश्यक है। हमें एक सेतु निर्माण करने में धीरज रखना चाहिए, तब हम सुसमाचार के साथ मुसलमानों तक पहुंच सकते हैं। कभी-कभी हम सफल होते हैं। लेकिन कई बार हम एक सेतु निर्माण होन से पहले ही तेजी से आगे बढ़ने के कारण विफल हो जाते हैं। ''महसूस की गई जरूरत'' दृष्टिकोण में अधिक समय लग सकता है। लेकिन इसके कुछ निश्चित लाभ हैंः

१) संदेश धीरे-धीरे पेश किया जाता है।

२) व्यर्थ के झगड़ों से बचा जाता है।

३) मसीहीयत अधिक प्रासंगिक और व्यवहारिक दिखाई देती है।

टिप्पणियाँ -

७. निम्नलखित आरेख लोकप्रिय इस्लाम में सामान्य महसूस की गई जरूरतों और उनके उत्तरों को प्रस्तुत करता है, जैसा कि सर्वात्मवाद और मसीहीयत में पहचाना गया है।[५]

लोकप्रिय इस्लाम में महसूस की गई ज़रूरतें	सर्वात्मवादी उत्तर			महसूस की गई ज़रूरतों के लिए मसीही उत्तर
	अत्यंत		कम अत्यंत	
अज्ञात का भय	मूर्तिपूजा पत्थर आराधना	अंधभक्ति तावीज टोना	अंधविश्वास	रक्षक और मार्गदर्शक के रूप में सुरक्षा
दुष्ट का भय	तंत्र-मंत्र जादू-टोना	जंतर/बंधन	झाड़-फूंक	झाड़-फूंक/मसीह में सुरक्षा
भविष्य का भय	स्वर्गदूत आराधना	अटकल मंत्र	भाग्यवाद कट्टरता	भविष्य के प्रभु के रूप में मसीह पर भरोसा
समूह में न होने की शर्म	जादू शाप/आशीष	बाल/नाख़ून काटना	-	विश्वासियों की संगती में स्वीकृति
दुष्ट के विरुद्ध व्यक्ति की सामर्थ्यहीनता	संत आराधना	-	संत/स्वर्गदूत याचिका	पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और अधिकार
जीवन की व्यर्थता	-	परिचित आत्मा	-	परमेश्वर की संतान के रूप में जीवन में उद्देश्य
बीमारी	पेड़/संत आराधना	चंगाई का जादू	-	अलौकिक चंगाई

निष्कर्ष:

सेतु अंतिम लक्ष्य नहीं है। सेतु पार जाने के लिए बनाया जाता है।

अनंत जरूरतों को पहचानने के लिए महसूस की गई जरूरतों को पहचाना गया है।

आध्यात्मिक और धार्मिक सेतुओं का निर्माण किया जाता है ताकि सच्ची आध्यात्मिकता और धार्मिक समझ को प्रस्तुत किया जा सके।

शायद सबसे महत्वपूर्ण सेतु जिसका निर्माण करने की जरूरत है, वह हमारी अपनी धारणा से संबंधित है कि वास्तक में मुसलमान कौन हैं।

जब हम उन्हें क्रूर और निर्दयी समझना बंद कर देते हैं, और उन्हें परमेश्वर की खोज में खोई हुई आत्माओं के रूप में देखना शुरू कर देते हैं; और जब हम उन्हें केवल मुसलमानों के रूप में सोचनता बंद करते हैं, और उन्हें अपने समान मनुष्य संमझते हैं जिन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, तो हम उन्हें वैसे ही देखेंगे जैसे यीशु उन्हें देखते हैं और हम उन्हें यीशु के पास लाने में सक्षम होंगे!

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

इस्लामः अंतिम टिप्पणियाँ

[१]सी.आर. मार्श, शेयर योर फेथ विद अ मुस्लिम (शिकागोः मूडी प्रेस, १९७५), पृष्ठ १९।

[२]इबिड।, पृष्ठ ८।

[३]इबिड।, पृष्ठ १२।

[४]अब्दियाह अकबर अब्दुल-हक़, शेयरिंग योर फेथ विद अ मुस्लिम (मिनियापोलिस, एम.एनः बेथनी फैलोशिप इंक., १९८०), पृष्ठ ७५।

[५]फिल पारशल, ब्रिजेज टू इस्लाम (ग्रैंड रैपिड्स, एम.आईः बेकर बुक प्रेस, १९७५), टेबल २।